मारगेंथाऊ का यथार्थवादी दृष्टिकोण
(Realistic theory of Morgenthau's)

विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोणों का भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान होता है। दार्शनिक दृष्टिकोणों के अन्तर्गत सबसे पहले मानव स्वभाव का अध्ययन तथा उसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर विचार किया जाता है। इस दृष्टिकोण में आगमन पद्धति (inductive method) द्वारा मानवीय स्वभाव का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में किया जाता है। दार्शनिक पद्धतियाँ दो प्रकार की होती है :- (i) यथार्थवादी (realistic) तथा (ii) अयथार्थवादी या आदर्शवादी (unrealistic or idealistic)।

यथार्थवादी दृष्टिकोण पूर्ण रूप से तथ्यों एवं विश्व की वास्तविक घटनाओं पर आधारित होती है। इसके अन्तर्गत पूर्व मान्यताओं तथा अपूर्ण आदर्शों का कोई स्थान नहीं रहता है। इसका एकमात्र आधार अनुभव और तर्क है। इसमें तथ्यों और घटनाओं के वास्तविक स्वरूप के अध्ययन के पश्चात तर्क संगत निष्कर्ष निकाले जाते है। इसी कारण इसे राजनीतिक यथार्थवादी सिद्धांत कहा जाता है। Morgenthau यथार्थवादी सिद्धांत के प्रमुख हिमायती है। जार्ज एफ० केनन और राईनाल्ड नेबूर जैसे विद्वानों ने भी समर्थन किया है। वस्तुतः यथार्थवादी विचारधारा 18 वीं और 19वीं शताब्दी में अधिक प्रचलित थी। लेकिन इस दृष्टिकोण को सैद्धांतिक आधार प्रदान करने का श्रेय मॉरगेंथाऊ को ही प्राप्त है। इन्होंने यथार्थवादी सांचे को वैज्ञानिक ढंग से विकसित किया है, जिसके कारण कुछ लोगों ने मारगेंथाऊवाद और यथार्थवाद को एक दूसरे का पर्याय माना है। राजनीतिक यथार्थवाद काल्पनिक तथा अमूर्त मान्यताओं के स्थान पर ऐतिहासिक घटनाओं को ही अपना आधार स्वीकार करता है। यह सिद्धांत मानव प्रकृति को उसी रूप में देखता है जैसा कि वह है तथा ऐतिहासिक घटनाओं को उसी रूप में लेता है जिस रूप में वे घटित हुई है। इसी कारण से इस सिद्धांत को यथार्थवाद की संज्ञा प्रदान की गई है।

मॉरगेंथाऊ के यथार्थवाद के मौलिक तत्व (Fundamental elements of Morgenthau's Realism) :-

मॉरगेंथाऊ ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया। अपने यथार्थवादी सिद्धांत को 6 शीर्षकों के अन्तर्गत रखा है :-

(1) यथार्थवादी नियमों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का नियंत्रण (control of inter

प्राकृतिक नियम शाश्वत एवं सत्य होते हैं जो मानव प्रकृति, समाज व उसके ही समान राजनीति का भी निर्धारण करते हैं। इस राजनीति की जड़ें देश की भूगोल, इतिहास एवं मनुष्य के मन में जमी होती है जो तत्कालीन राजनीतिक व्यवहारों को भी बहुत हद तक प्रभावित करती है। यदि घटनाओं के तथ्यों का तर्कपरक व्याख्या अनुभव के आधार पर हो, तो यथार्थवादी सिद्धांतों का निर्माण होता है। उदाहरणार्थ :- किसी विदेश नीति को समझने के लिए वहाँ की राजनीतिक गतिविधियों, भौगोलिक स्थितियों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के आधार पर संभावित परिणामों का विश्लेषण एवं विवेचन करना आवश्यक है। विवेचन के बाद ही कुछ सामान्य निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

(II) शक्ति द्वारा राष्ट्रहित का प्रसार (Expansion of national interest by power)

मारगेन्थाऊ के अनुसार शक्ति ही वह वस्तु है जिसके द्वारा प्रभुत्व (शासन) स्थापित किया जाता है। जो लोग शक्ति का प्रयोग करते है और जिन लोगों पर शक्ति का प्रयोग किया जाता है, उनके बीच शक्ति से एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक संबंध स्थापित हो जाता है। लेकिन सैन्य शक्ति को इसमें शामिल नहीं करता है। उसने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि शक्ति का तात्पर्य राजनीतिक शक्ति होता है। शक्ति साधन और साध्य दोनों है। यह साधन इसलिए है कि इससे राष्ट्रहित की पूर्ति होती है, साध्य इसलिए है कि शक्ति का आधिपत्य बना रहता है। किसी राज्य के हित न तो निश्चित होते है और न सीमित। इनमें हमेशा फैलाव होता रहता है। इस प्रकार वर्तमान के विशिष्ट हितों तथा भावी अनुमानित हितों की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रहित के फैलाव के साथ-साथ शक्ति का भी फैलाव होता रहे।

(III) राष्ट्रीय हितों पर परिस्थितियों का प्रभाव :- (Effect of circumstances on the National Interests) :- राष्ट्रीय हित स्थिर नहीं होते। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव डालने वाली शक्तियाँ शाश्वत (सदा गतिशील) है। ये प्रत्येक देश की परिस्थितियों से प्रभावित होती रहती है। इन परिस्थितियों के कारण राष्ट्रीय हित परिवर्तित होते रहते है। इस प्रकार परिवर्तित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विदेश नीति का निर्धारण शक्ति के सन्दर्भ में करना चाहिए।

(IV) नैतिक आदर्शों के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण :- (Realistic outlook towards moral idealism) :- राजनीतिक नियमों में नैतिक आदेश अमूर्त और सार्वभौमिक (सांसारिक) हितों पर आधारित न होकर किसी व्यवहार की नैतिकता-अनैतिकता, औचित्य-अनौचित्य का निर्णय राजनैतिक अपेक्षा की दृष्टि से रखकर किया जाता है। इसका कारण यह है कि राज्यों पर प्रभावी नैतिकता देश काल और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित हो जाती है।

(V) राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय आचरण के भिन्न सामान्य नैतिक नियम :- (Distinctive common moral law of national and International behaviour)

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

यथार्थवादी सिद्धांत किसी राष्ट्र विशेष की नैतिक आकांक्षाओं और विश्व को नियंत्रित करने वाले नैतिक नियमों के मध्य संबंध स्थापित नहीं करता, अर्थात् राष्ट्र तथा विश्व के सामान्य नैतिक नियम अलग-अलग होते हैं। यथार्थवादी दर्शन प्रत्येक राष्ट्र को एक ऐसे राजनीतिक कर्ता के रूप में देखता है जो सदैव शक्ति के माध्यम से अपने हितों की सिद्धि के कार्य में जुटा रहता है। यह दर्शन राष्ट्रीय हित के लिए झूठ बोलने, विश्वासघात करने तथा छल-कपट का प्रयोग में संकोच नहीं करता।

(vi) राजनीतिक पहलुओं की प्रधानता (Dominance of Political aspects) :- राजनीतिक यथार्थवाद राजनीतिक क्षेत्र की स्वायत्तता को मानता है। इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय हित साधन के लिए शक्ति प्रयोग को ही प्रमुखता दी जाती है जो अधिकांशतः में हित साधन रूप में धन को दी जाती है। राजनैतिक विचारों के अतिरिक्त अन्य विचारों के महत्व और उपयोगिता को मानते हुए इसमें राजनीतिक मानदण्डों को ही प्रधानता प्रदान की जाती है। इसलिए राजनीतिक यथार्थवाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रति कानूनी और नैतिक दृष्टिकोण अपनाना नहीं चाहता है।

यथार्थवादी सिद्धांत का मूल्यांकन (Evaluation of realistic theory) :-

Morgenthau द्वारा प्रतिपादित यथार्थवादी विचारधारा का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में विशेष महत्व है। इस विचारधारा ने राष्ट्रीय हितों तथा उनकी सिद्धि के निमित्त (लिए) शक्ति के प्रयोग संबंधी सिद्धांतों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का पहली बार विस्तृत रूप से विश्लेषण कर इस विषय को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया है। उस दृष्टि से मोरगेंथाऊ द्वारा अपनायी गयी यथार्थवादी दृष्टि की सार्थकता अवश्य है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन अधिकतर उस प्रक्रिया का विवेचन है जिसमें विभिन्न राज्यों के हित एक दूसरे से टकराते हैं। इस प्रक्रिया के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न राष्ट्रों के हितों को उनके असली रूप में देखा जाए और साथ ही उन हितों की प्राप्ति के लिए विभिन्न राज्यों द्वारा अपनाये गए साधनों को भी ध्यान में रखा जाए। इस दृष्टि से Morgenthau का यथार्थवादी दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एकपक्षीय या एकांगी अध्ययन ही प्रस्तुत करता है। Morgenthau के यथार्थवादी सिद्धांत की आलोचना निम्नलिखित आधारों पर की जा सकती है।

(i) एकांगी तथा एकपक्षीय अध्ययन (One sided study) :- हितों के मध्य संघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का केवल एक पक्ष है। सहयोग अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का दूसरा पक्ष है जिसके सम्बन्ध में इस सिद्धांत में कुछ नहीं कहा गया है।

(ii) अनुमान पर आधारित (Based on speculation) :- मोरगेंथाऊ ने यथार्थवादी सिद्धांत का आधार मानव प्रकृति को माना है, लेकिन उनकी मानव प्रकृति संबंधी धारणाएं वैज्ञानिक न होकर अनुमान पर आधारित हैं।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(iii) अस्पष्ट तथा विरोधाभासी (Ambiguous and Inconsistent) मारगेंथाऊ ने अपनी पुस्तक राष्ट्रों के मध्य राजनीति (Political among Nations) में लिखा है कि "जिस प्रकार अर्थशास्त्र का सम्बन्ध धन से है उसी प्रकार राष्ट्रीय हित का सम्बन्ध शक्ति से है किन्तु अपनी दूसरी पुस्तक डाइलेमाज ऑफ पोलिटिक्स (Dilemmas of Politics) में लिखता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र सामान्य होना चाहिए ताकि वह अन्य क्षेत्रों में भी प्रवेश कर सके।

(iv) राजनय द्वारा शांति स्थापना का विचार एक दिवा-स्वप्न (Idea of establishing peace through diplomacy a day dream) :- राजनय द्वारा शांति-स्थापना का विचार करते समय Morgenthau ने योग्य राजनयज्ञों की आवश्यकता को दर्शाया है। लेकिन वह यह बताने में असमर्थ रहा है कि जब तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति 'शक्ति संघर्ष' पर आधारित है और संघर्ष का निपटारा केवल राजनय द्वारा ही संभव है तो ऐसी कठिन परिस्थितियों में शांतिवादी राजनय कहाँ से आयेंगे और वे किस प्रकार शांति स्थापना संबंधी आदेश को प्राप्त कर सकेंगे।

(v) पुराना सिद्धांत (Old Principle) :- इसी सिद्धांत की इस आधार पर आलोचना की जाती है कि जिस यथार्थवादी सिद्धांत का 18 वीं एवं 19 वीं शताब्दी के सिद्धांत का वर्णन किया है वह पुराना है। इसे वर्तमान समय की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर लागू नहीं किया जा सकता। वर्तमान समय के लिए यह प्रासंगिक नहीं है।

(vi) राष्ट्रीय हित की अस्पष्ट व्याख्या (Vague explanation of national interest) :- Morgenthau की राष्ट्रीय हित संबंधी मान्यताओं में कुछ मौलिक त्रुटियाँ है। उसने यह नहीं बताया कि राष्ट्रीय हित क्या है। राष्ट्रीय हित का स्वरूप हमेशा बदलता रहता है, क्योंकि समय, परिस्थिति एवं राष्ट्रीय नीति के संचालकों द्वारा निर्धारित होने के कारण वह सदा एक नहीं रह सकता।

(vii) अनैतिक सिद्धांत (Immoral Principle) :- Morgenthau के राष्ट्रीय हित संबंधी सिद्धांत को अनैतिक भी कहा जा सकता है। उनका कहना है कि प्रत्येक राष्ट्र के दृष्टिकोण में एक नैतिकता निहित रहती है जो खतरनाक है क्योंकि इसके अनुसार तो राज्यों के किसी कार्य को कभी भी गलत नहीं ठहराया जा सकता है।

यथार्थवादी सिद्धांत का योगदान (Contribution of realistic theory) :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में Morgenthau का योगदान काफी महत्वपूर्ण है जो इस प्रकार है - (i) मारगेंथाऊ यथार्थवाद का हिमायती है (ii) अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का क्रमबद्ध अध्ययन (iii) व्यवस्थापरक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन का मार्ग प्रशस्त (iv) परवर्ती (बाद वाला) सिद्धांतों का मार्ग दर्शन (v) नई वैज्ञानिक पद्धतियाँ बेकार हैं।

निष्कर्ष (Conclusion) :- निष्कर्षतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में मारगेंथाऊ का महत्वपूर्ण स्थान है। आज भी राष्ट्रीय हित और शक्ति संघर्ष जैसे तत्व अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के महत्वपूर्ण अंग हैं और आज अन्तर्राष्ट्रीय जगत में संघर्ष का अंत दिखाई नहीं पड़ता बल्कि इसका रूप धीरे-धीरे विकराल ही होता चला जा रहा है।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान
डी० के० कालेज, डुमराँव
दिनांक 11/05/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA